इकाई 29 व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य - मर्टन

इकाई की रूपरेखा

29.0 उद्देश्य

29.1 प्रस्तावना

29.2 प्रकार्य की अवधारणाएं

- 29.2.1 प्रकार्य शब्द के विभिन्न अर्थ
- 29.2.2 निष्पक्ष परिणाम (objective consequences) और स्वपरक मनोवृत्तियां (subjective dispositions)
- 29.2.3 प्रकार्य, दुष्प्रकार्य (dysfunction) व्यक्त प्रकार्य और अव्यक्त प्रकार्य

29.3 प्रकार्यात्मक विश्लेषण के आधार तत्व (postulates of functional analysis)

- 29.3.1 प्रकार्यात्मक एकता का आधार तत्व (postulate of functional unity)
- 29.3.2 सार्विकीय प्रकार्यवाद का आधार तत्व (postulate of universal functionalism)
- 29.3.3 अपरिहार्यता का आधार तत्व (postulate of indispensability)

29.4 प्रकार्यात्मक विश्लेषण का प्रतिरूप (paradigm)

- 29.4.1 वे तथ्य जिनके प्रकार्य देखे जा सकते हैं
- 29.4.2 निष्पक्ष परिणामों की अवधारणाएं
- 29.4.3 जिसका प्रकार्य देखा जा रहा है उस इकाई की अवधारणा
- 29.4.4 प्रकार्यात्मक विश्लेषण के वैचारिक दृष्टिकोणों में समस्याएं

29.5 व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य - यह विभेद क्यों?

- 29.5.1 "तर्कहीन" लगने वाली बातें सार्थक हो जाती हैं
- 29.5.2 खोज के नये सवालों का उदय
- 29.5.3 समाजशास्त्रीय ज्ञान का विस्तार
- 29.5.4 स्थापित नैतिक मूल्यों को चुनौती मिलती है

29.6 सारांश

29.7 शब्दावली

29.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

29.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

29.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आपके लिए संभव होगा

- व्यक्त तथा अव्यक्त प्रकार्यों की अवधारणाओं में अंतर स्पष्ट करना
- यह समझाना कि रॉबर्ट के.मर्टन ने क्यों और कैसे प्रकार्यात्मक विश्लेषण को नया अर्थ दिया तथा किस प्रकार मर्टन द्वारा किया गया विश्लेषण उसके परंपरागत आधार तत्वों और प्रतिरूपों से भिन्न है
- यह दिखाना है कि कैसे अव्यक्त प्रकार्य की अवधारणा समाज के प्रति हमारे बोध को मुखरित करती है
- अपने समाज की संस्थाओं और सांस्कृतिक गतिविधियों को नयी दृष्टि से देखना।

29.1 प्रस्तावना

इस खंड की इकाई 27 और 28 में आपने समाजशास्त्र में टालकट पार्सन्स के योगदान के बारे में पढ़ा। इस इकाई में आपको प्रकार्यात्मक विश्लेषण के क्षेत्र में एक अन्य जाने माने अमरीकी समाजशास्त्री और पार्सन्स के विद्यार्थी रॉबर्ट के मर्टन के योगदान के बारे में बताया जाएगा। प्रकार्यात्मक विश्लेषण के बारे में कुछ बातों की जानकारी आपको पहले से है। लेकिन इस इकाई में, खासतौर से इसके भाग 29.2 में समाजशास्त्रियों की दृष्टि में प्रकार्य के अर्थ के साथ-साथ इसके दो प्रकारों, व्यक्त तथा अवयक्त प्रकार्य को भी समझाया जाएगा। आपको दुष्प्रकार्यों (dysfunctions) की जानकारी भी मिल सकेगी।

भाग 29.3 में प्रकार्यात्मक विश्लेषण के आधार तत्वों (postulates) की चर्चा होगी, ख़ासतौर से मलिनॉस्की और रैडक्लिफ़-ब्राउन जैसे सामाजिक नृशास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित परंपरागत प्रकार्यवाद के आधार तत्वों के बारे में चर्चा के बाद यह बताया जाएगा कि रॉबर्ट मर्टन किस तरह इन परंपरागत आधार तत्वों से असहमत है और नये सिद्धांत प्रस्तुत करता है।

भाग 29.4 में प्रकार्यात्मक विश्लेषण के प्रतिरूप (paradigm) की चर्चा की गई है। रॉबर्ट मर्टन का कहना है कि किसी भी समाजविज्ञानी को इस प्रतिरूप की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए ताकि वह अपनी प्राथमिकताएं निर्धारित कर सके कि उसे किन क्षेत्रों में और किस दिशा में काम करना है। ऐसे प्रतिरूप (paradigm) की आवश्यकता अध्ययन में अनियमितता और गड़बड़ी को रोकने के लिए ज़रूरी होती है। अंत में भाग 29.5 में आपको अव्यक्त प्रकार्य की अवधारणा की जानकारी मिलेगी। मर्टन का कहना है कि इस अवधारणा से समाजशास्त्री के ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार होता है और समाजशास्त्रीय शोध के नये क्षेत्रों का पता लगता है।

29.2 प्रकार्य की अवधारणाएं

"प्रकार्य" शब्द को समझाना शायद ज़्यादा कठिन नहीं है। प्राय: हमें यह तो मालूम ही होता है कि हमारे समाज का काम-काज कैसे चलता है। हमने समाचार पत्र पढ़ा और इससे हमें दुनिया भर की जानकारी मिली। इसी तरह अपने विश्वविद्यालय या अपने कार्यालय जाने के काम हैं - आपको मालूम ही है कि विश्वविद्यालय आपको शिक्षा देता है, ज्ञान देता है और समाज में अपनी भूमिका के लिए आपको तैयार करता है। आपके काम करने की जगह का भी अपना संगठन और काम करने का तरीक़ा है। चुनावों में हमारे मतों से प्रतिनिधि चुने जाते हैं जो हमारे विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरे शब्दों में, यह आसानी से समझा जा सकता है कि समाज को बनाने वाले विविध घटक हमें समाज से सकारात्मक तथा रचनात्मक रूप से जोड़ते हैं, चाहे वह अखबार हो, विश्वविद्यालय हो, काम करने का स्थान हो या फिर हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएं हों। इस तरह समाज के अंग और सक्रिय सदस्य के रूप में सामाजिक संस्थाएं आपके योगदान को बढ़ाती हैं। इससे समाज आपस में जुड़ा रहता है। सामाजिक संस्थाओं का यही प्रकार्य है कि समाज में एकात्मा बनी रहे।

रॉबर्ट मर्टन के प्रकार्यात्मक विश्लेषण को पढ़ने से पहले ही बिना किसी संशय के यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समाजशास्त्र की भाषा में प्रकार्य से हमारा मतलब समाज के आपसी जुड़ाव में सामाजिक संस्थाओं अथवा सांस्कृतिक कार्यकलापों की भूमिका से है। दूसरे शब्दों में समाज इसीलिए काम कर पाता है क्योंकि इसको बनाने वाले तत्व यानि सामाजिक संस्थाएं और सांस्कृतिक रीति-रिवाज़ सामाजिक एकता को बनाए रखने में अपना-अपना योगदान देते हैं। इसी योगदान को प्रकार्य कहते हैं जिससे समाज में व्यवस्था, एकता और जुड़ाव उत्पन्न होते हैं।

कुछ प्रकार्यों के बारे में तो आपको जानकारी होती है और कुछ प्रकार्यों का आपको पता भी नहीं

चल पाता। जरा सोचिए कि आपको हर वर्ष परीक्षा देने को क्यों कहा जाता है। आपको मालूम है कि परीक्षाएं आपके ज्ञान की परीक्षा लेने के लिए ली जाती हैं, इससे आपको परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है ताकि आप अपना कौशल और अपनी बुद्धिमता बढ़ाएं जिससे समाज का बेहतर सदस्य बनना सुगम हो। यह निश्चय ही परीक्षाओं का व्यक्त उद्देश्य है जिससे हम परिचित हैं।

लेकिन परीक्षाओं के मात्र यही प्रकार्य नहीं हैं। उनके एक और प्रकार्य से आप अवगत नहीं हैं परीक्षाएं इस तथ्य को पुष्ट करती हैं कि कुछ "अच्छे" और कुछ "कम अच्छे" विद्यार्थी होते हैं। इसका तात्पर्य है कि समाज में हर व्यक्ति समान नहीं है तथा योग्यता , बुद्धि और ज्ञान सब लोगों में बराबर-बराबर नहीं बांटा जा सकता। दूसरे शब्दों में परीक्षाएं आपको यह मानने को प्रेरित करती हैं कि लोकतंत्र में भी किसी न किसी प्रकार का पदक्रम अनिवार्य है। इस तथ्य की स्वीकृति से विवादों की आशंका कम हो जाती है। वास्तव में यह स्वीकृति समाज में सबसे निभाकर चलने का पाठ पढ़ाती है। बड़े-छोटे तथा ज़्यादा और कम योग्य होने के इस तथ्य को मान लेने से समाज में अंतर्निहित असमानता और पदक्रम के बावजूद, व्यवस्था, एकता और जुड़ाव बने रहते हैं, यह परीक्षा प्रणाली का अव्यक्त प्रकार्य है। यह परीक्षा का गूढ़ अर्थ है, जिसका हमें हमेशा चेतन रूप से ध्यान नहीं रहता।

इस संक्षिप्त प्रस्तावना में संभवत: प्रकार्यों के व्यक्त तथा अव्यक्त रूप में आपकी रुचि जगी होगी। अब आपको यह जानने की उत्सुकता होगी कि मर्टन ने कैसे प्रकार्यात्मक विश्लेषण को नए तरीके से समझाया। लेकिन इससे पहले आपको प्रकार्य की अवधारणा की स्पष्ट जानकारी होनी चाहिए। मर्टन की नज़र में हमें इस अवधारणा को विभिन्न परिप्रेक्ष्य में जांचना परखना चाहिए ताकि हमें इसकी विश्लेषणात्मक महत्ता समझ में आ जाए। मर्टन ने 1949 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर* में इस अवधारणा को स्पष्ट किया है।

29.2.1 प्रकार्य शब्द के विभिन्न अर्थ

समाजशास्त्र में "प्रकार्य" शब्द का इस्तेमाल करते समय हमें इसके विभिन्न अर्थों की पूरी जानकारी होनी चाहिए। मर्टन के अनुसार "प्रकार्य" अर्थात् "फ़ंक्शन" शब्द पांच विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है। आइए, पाँचों अर्थों को क्रमश: देखें।

i) "फ़ंक्शन" (function) शब्द का पहला अर्थ अंग्रेज़ी में किसी सार्वजनिक समारोह या खुशी के मौके से है, जिसे आमतौर से रस्म-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। मर्टन ने कहा है और आपको भी स्पष्ट होगा कि "फंक्शन" शब्द के इस अर्थ का समाजशास्त्रीय अवधारणा से कोई भी संबंध नहीं है।

ii) इस शब्द को अंग्रेज़ी में पेशे की तरह भी लिया जाता है। लेकिन समाजशास्त्र को इस अर्थ से भी कुछ लेना-देना नहीं है।

iii) तीसरा "प्रकार्य" का अर्थ किसी पद पर कार्यरत व्यक्ति को सौंपे गए काम से है, उदाहरण के लिए छोटे बच्चों के स्कूल के किसी अध्यापक का काम बच्चों को पढ़ाना है, डॉक्टर का काम बीमारों का इलाज करना है इत्यादि। मर्टन के अनुसार यह परिभाषा पर्याप्त नहीं है। उनके अनुसार इस परिभाषा से इस बात से ध्यान हट जाता है कि "काम केवल किसी पद पर आसीन व्यक्ति द्वारा ही नहीं किया जाता, बल्कि अनेक सामाजिक काम-काज सामाजिक प्रक्रियाओं, सांस्कृतिक, विन्यासों और विश्वासों द्वारा भी सम्पन्न होते हैं।

iv) चौथे "फ़ंक्शन"शब्द का गणित में अर्थ एक और तरह से लिया जाता है। इसके अनुसार जब राशि Y का राशि X से संबंध एक नियमानुसार निर्धारित हो तो राशि के एक मान के लिए Y राशि का एक और केवल एक ही मान होता है।

v) मर्टन का कहना है कि प्रकार्यात्मक विश्लेषण में "फ़ंक्शन" या प्रकार्य का पांचवा अर्थ जीव-विज्ञान से लिया गया है। जहाँ इसका अर्थ "शरीर को बनाए रखने और उसकी देखरेख में किसी शारीरिक प्रक्रिया के योगदान" से होता है।

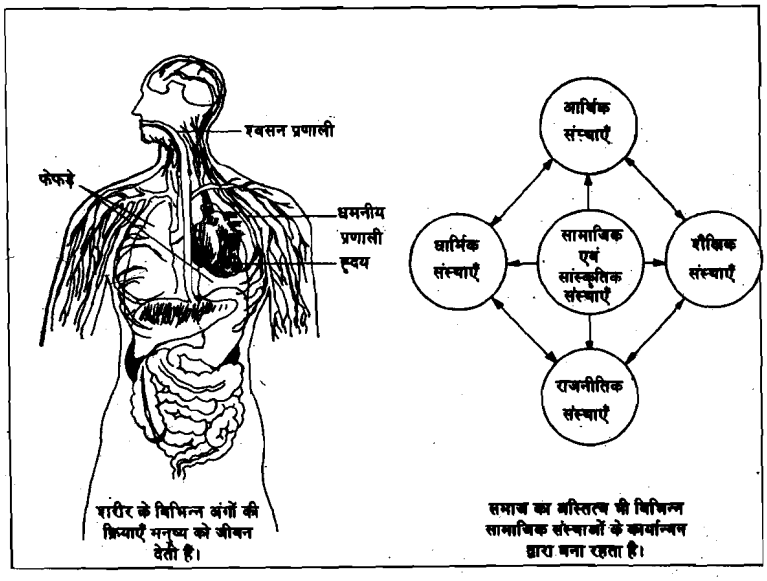

चित्र 29.1: जीव विज्ञान से अपनाई गई समाजशास्त्र में प्रकार्य की अवधारणा

सामाजिक नृशास्त्री रैडक्लिफ-ब्राउन ने "प्रकार्य" शब्द को इसी अर्थ में सामाजिक विज्ञानों में इस्तेमाल करते हुए लिखा है "किसी भी प्रक्रिया के प्रकार्य से हमारा आशय सामाजिक जीवन में उसकी सम्पूर्ण भूमिका से और सामाजिक संरचना को बनाए रखने में उसके योगदान से है"। नृशास्त्री मलिनॉस्की के अनुसार, सामाजिक और सांस्कृतिक इकाइयों के "प्रकार्य" से हमारा तात्पर्य है समग्र सांस्कृतिक प्रणाली में इन इकाइयों की एक दूसरे से संबंद्ध होकर निभायी गई भूमिका। समाजशास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते, आपको "प्रकार्य" के इसी विशेष अर्थ पर विशेष ध्यान देना है और दो बातें याद रखनी हैं

- पहली बात यह है कि समाज अव्यवस्थित और बेतरतीब नहीं होता, इसकी अपनी व्यवस्था और संरचना है। दूसरे शब्दों में राजनीतिक प्रणाली अर्थव्यवस्था, धर्म, परिवार, शिक्षा जैसे समाज के अनेक घटकों को एक दूसरे से अलग करके नहीं देखा जा सकता। सभी घटक एक दूसरे से पूरी तरह जुड़े हैं। अपने विविध अंगों के बीच इसी अंतर्निहित संबंध से ही समाज टिका रहता है।
- दूसरे, इस अंतर्निहित संबंध को सही तरीके से समझने के लिए आपको यह जानना होगा कि किस प्रकार हर घटक इस अंतर्निहित व्यवस्था और संरचना को बनाए रखने में अपना योगदान देता है। यही योगदान या भूमिका उस घटक का "प्रकार्य" है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि शिक्षा का अपना प्रकार्य है क्योंकि शिक्षा का योगदान ज्ञान और कौशल देना है, जिससे समाज प्रगति करता है।

29.2.2 निष्पक्ष परिणाम (objective consequences) और स्वपरक मनोवृत्तियां (subjective dispositions)

अब मर्टन ने बताया है: सामाजिक संस्था विशेष या सांस्कृतिक गतिविधि विशेष का क्या कार्य है, यह कौन निर्धारित करेगा - काम करने वाला या उसे देखने वाला? इस प्रश्न का अर्थ उदाहरण से समझें। यदि कोई लड़की विवाह कर रही है और आप पूछें कि वह विवाह क्यों कर रही है? इसका क्या प्रकार्य है? संभव है, वह बताए कि मानवीय आवश्यकताओं और प्रेम की आवश्यकता पूरी करने के लिए विवाह कर रही है। मर्टन के अनुसार इस उत्तर में कर्ता अपने निजी व्यक्तिगत उद्देश्य को विवाह के निष्पक्ष प्रकार्य से अलग करके नहीं समझ पा रही है क्योंकि विवाह अथवा परिवार का निष्पक्ष प्रकार्य प्रेम की पूर्ति नहीं, बल्कि बच्चे का समाजीकरण या उसे समाज के अनुरूप बनाना है।

इसलिए मर्टन के अनुसार, प्रकार्य की धारणा में प्रेक्षक का दृष्टिकोण शामिल है और ज़रूरी नहीं

कि कर्ता का दृष्टिकोण भी उसमें शमिल ही हो। दूसरे शब्दों में सामाजिक प्रकार्य में देखे जा सकने वाले निष्पक्ष परिणामों को ध्यान में रखा जा सकता है, स्वपरक मनोवृत्तियों को नहीं। स्कूल जाने वाली बच्ची यह सोच सकती है कि वह स्कूल इसलिए जाती है कि उसे वहां मित्रों के साथ खेलना-कूदना मिलता है। पर स्कूल का कार्य तो कुछ और ही है। स्कूल का कार्य ज्ञान का विकास है जिसकी समाज को अपने स्थायित्व के लिए ज़रूरत होती है। इसी बात को इस तरह भी समझा जा सकता है कि सामाजिक संस्था विशेष अथवा सांस्कृतिक गतिविधि विशेष के प्रकार्य को समझने में समाजविज्ञानी के लिए मात्र कर्ता के निजी उद्देश्यों और स्वपरक मनोवृत्तियों से ही संतुष्ट हो जाना काफ़ी नहीं है। समाजविज्ञानी को प्रकार्य के निष्पक्ष परिणामों का अध्ययन करना होगा अर्थात् यह देखना होगा कि इस संस्था विशेष का समाज को जोड़े रखने में क्या योगदान है।

29.2.3 प्रकार्य, दुष्प्रकार्य (dysfunction), व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य

यह आपको स्पष्ट हो गया होगा कि प्रकार्य ऐसे देखे जा सकने वाले (observable) परिणाम हैं जिनसे व्यवस्था विशेष के अनुरूप ढलने में मदद मिलती है। लेकिन हर बार प्रकार्यों के ऐसे परिणाम नहीं होते। हर प्रकार्य से प्रणाली विशेष के अनुरूप ढलने में मदद नहीं मिलती। इसलिए मर्टन एक अन्य शब्द दुष्प्रकार्य (डिस्फंक्शन)का इस्तेमाल करता है। उसके अनुसार, दुष्प्रकार्य ऐसे देखे जा सकने वाले (observable) परिणाम हैं जो व्यवस्था के अनुरूप ढलने या उनके अनुकूल होने के बाधक होते हैं।

हम अपने समाज की ही कल्पंना करें। हमें यह तो मान्य होगा ही कि आधुनिक भारत में गतिशील लोकतांत्रिक, सबकी भागीदारी वाली और समतामूलक व्यवस्था आए। लेकिन हमारे समाज में जाति व्यवस्था का प्रकार्य इन उद्देश्यों को बल देना नहीं है उल्टे इसका हमारे सामाजिक उद्देश्यों पर प्रतिकूल असर पड़ता है, जाति प्रणाली दुष्प्रकार्य पैदा करती है। क्योंकि लोकतांत्रिक आदर्शों को मज़बूत बनाने के बजाए वह गतिशीलता, लोकतंत्रीकरण और भागीदारी को कम करती है। इसलिए जाति प्रणाली को दुष्प्रकार्यात्मक माना जाता है। (यही कारण है कि जाति के आधार पर भेद-भाव करना भारत में क़ानून की दृष्टि में अपराध है।)

आइए, अब हम व्यक्त तथा अव्यक्त प्रकार्यों की चर्चा करें। प्रकार्य चाहे व्यक्त हो चाहे अव्यक्त, इसके निष्पक्ष और देखे जा सकने वाले (observable) परिणामों से ही व्यवस्था के अनुकूल ढलने में मदद मिलती है। दोनों तरह के प्रकार्यों के बीच केवल एक अंतर है जिसे मर्टन ने बड़े स्पष्ट तरीक़े से बताया कि व्यक्त प्रकार्य में कार्य करने वालों को यह पता होता है और अव्यक्त प्रकार्य में उन्हें इसकी जानकारी नहीं होती। दूसरे शब्दों में, अव्यक्त प्रकार्य करने का न तो कर्ता का इरादा होता है, न इसके परिणाम का उसे पता चलता है।

ऐसा इसलिए होता है क्योंकि कार्य कर रहे लोग ऐसे परिणामों को देख सकते हैं जो तुरंत नज़र आएं। वे हमेशा अपने कार्यों के गहरे और छिपे हुए अर्थों को नहीं देख पाते लेकिन, आम लोगों को नज़र आने वाले अर्थ से आगे बढ़कर सामाजिक कार्यकलापों के छिपे हुए अर्थ की समाज विज्ञानियों को तलाश होती है।

उदाहरण के लिए एमिल दर्खाइम का दंड के सामाजिक प्रकार्यों का विश्लेषण महत्वपूर्ण है। दंड का व्यक्त और सीधा प्रकार्य स्पष्ट है। हर व्यक्ति इसे जानता है। यह अपराधी को याद दिलाता है कि समाज उसे असामाजिक व्यवहार या **विचलन** (deviance) की इजाज़त नहीं देगा। लेकिन इसका छिपा हुआ अव्यक्त प्रकार्य आमतौर से लोगों को पता नहीं चल पाता। दर्खाइम का कहना है कि अपराधी को दंड दिए जाने से कहीं गहरा अर्थ यह है कि दंड व्यवस्था से समाज की अपने सामूहिक विवेक पर आस्था मज़बूत होती है। अपराधी को दंड दिए जाने से समाज की अपनी ताक़त को सामूहिक एकता (collective conscience) का अहसास होता रहता है।

अगले भाग पर जाने से पहले बोध प्रश्न 1 को पूरा करें।

बोध प्रश्न 1

i) समाजशास्त्री "प्रकार्य" शब्द का किस अर्थ में इस्तेमाल करते हैं? लगभग आठ पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ii) व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्यों में क्या अंतर हैं? लगभग तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

iii) "दुष्प्रकार्य" का कोई सरल उदाहरण दीजिए। करीब तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

29.3 प्रकार्यात्मक विश्लेषण के आधार तत्व (postulates of functional analysis)

प्रकार्यात्मक विश्लेषण के क्षेत्र में रॉबर्ट मर्टन का योगदान एक विशेष महत्व रखता है। परम्परागत प्रकार्यवादियों की तुलना में उसकी नयी दृष्टि ने उसे पारंपरिक प्रकार्यात्मक विश्लेषण तक सीमित नहीं रखा है बल्कि प्रकार्यवाद को नयी सीमा तक पहुंचाया है। इसलिए, यह जानना ज़रूरी है कि मर्टन ने पारंपरिक प्रकार्यात्मक विश्लेषण के किन आधार तत्वों का खंडन किया। ये आधार तत्व हैं - i) प्रकार्यात्मक एकता का आधार तत्व, ii) सार्विकीय प्रकार्यवाद का आधार तत्व और iii) अपरिहार्यता का आधार तत्व। मर्टन ने अनेक नई बातें बताई और इनके आधार पर समझाया कि हर प्रकार्य सकारात्मक नहीं होता। समाज अनेक वर्गों तथा उपवर्गों में बंटा है और किसी के लिए जो सकारात्मक कार्य है वही दूसरे वर्ग के लिए नकारात्मक हो सकता है। इसके अलावा कोई भी प्रकार्य अपरिहार्य नहीं है, विभिन्न प्रकार्यों के विकल्प भी हो सकते हैं। आइए इन तत्वों की क्रमश: चर्चा करें।

29.3.1 प्रकार्यात्मक एकता का आधार तत्व (postulate of functional unity)

मर्टन ने रैडक्लिफ़-ब्राउन को प्रकार्यात्मक एकता के आधार तत्व का प्रमुख प्रणेता माना है। रैडक्लिफ़-ब्राउन का कहना है "समस्त सामाजिक प्रणाली को चलाने के लिए, उसके अनुरक्षण

(maintenance) के लिए किया गया योगदान ही सामाजिक गतिविधि का प्रकार्य होता है " इस आधार तत्व में यह बात निहित है कि हर सामाजिक प्रकार्य में एक तरह की एकरूपता होती है और सामाजिक प्रणाली के सभी अंग पूरे तालमेल और आंतरिक नियमितता के साथ मिल कर काम करते हैं। संभवत: अपेक्षाकृत समरूपकीय (homogeneous) असाक्षर सभ्यता में यह आधार तत्व सार्थक और सही हो। पर आज के जटिल आधुनिक समाज में, मर्टन के अनुसार प्रकार्यात्मक एकता के आधार तत्व को फिर से परिभाषित करना ज़रूरी है। सबसे पहले तो मर्टन इसी बात पर शंका करता है कि सभी समाज पूर्णत: समन्वित हैं, जिसमें हर सांस्कृतिक दृष्टि से मान्य कार्यकलाप या विश्वास पूरे समाज के लिए सकारात्मक भूमिका निभाता है। मर्टन हमें यह याद दिलाना चाहता है कि सामाजिक परंपराएं या विश्वास एक ही समाज के कुछ समूहों के लिए सकारात्मक और कुछ के लिए नकारात्मक भूमिका निभाने वाले हो सकते हैं।

मर्टन ने इस आधार तत्व की बड़े रोचक तरीक़े से समालोचना की है। इसमें निहित अर्थ को समझने के लिए अपने ही समाज की किसी सामाजिक गतिविधि को लें। उदाहरण के लिए, धर्म को ही लें। धार्मिक कट्टरपंथियों द्वारा प्रचारित किए जाने वाले धर्म से कौन सा कार्य सिद्ध होता है? दर्खाइम का यह कथन सही है कि असाक्षर सभ्यता में धर्म की प्रकार्यात्मक भूमिका एकता लाने की हो सकती है। पर हमारे बहु-प्रजातीय तथा बहुधर्मी समाज में कट्टरपंथियों द्वारा प्रचारित धर्म के अन्य अल्पसंख्य समुदायों के लिए बहुत बुरे परिणाम हो सकते हैं। भले ही कट्टपंथी धर्म के **प्रभुत्व** को अनिवार्य माने। लेकिन ज़रूरी नहीं कि यह पूरे समाज के लिए अनिवार्य और सकारात्मक कार्य हो। कट्टरपंथियों के राजनैतिक हितों को देखते हुए यह सकारात्मक कार्य हो सकता है पर अन्य लोगों के लिए तो यह नकारात्मक ही होगा।

हमारे अपने समाज का यह उदाहरण आपको दर्शाता है कि मर्टन ने प्रकार्यात्मक एकता के आधार तत्व का खंडन क्यों किया। मर्टन के अनुसार आज के जटिल समाज में प्रकार्यात्मक एकता का यह आधार तत्व लागू नहीं किया जा सकता है। प्रकार्यात्मक विश्लेषण करने से पहले समाजविज्ञानी के लिए यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि किस इकाई विशेष के लिए कोई सामाजिक या सांस्कृतिक तथ्य सकारात्मक है। समाजविज्ञान को यह भी स्पष्ट रूप से समझ लेना है कि किसी प्रक्रिया या संस्था का कार्य कुछ लोगों या उपसमूह के लिए सकारात्मक हो सकता है, जबकि अन्य के लिए नकारात्मक। जैसा कि कट्टरपंथियों वाले उदाहरण से स्पष्ट है।

29.3.2 सार्विकीय प्रकार्यवाद का आधार तत्व (postulate of universal functionalism)

इस आधार तत्व के अनुसार सभी सामाजिक अथवा सांस्कृतिक स्वरूपों के प्रकार्य सकारात्मक होते हैं। मलिनॉस्की किसी भी स्थिति में इस आधार तत्व को सही मानता है, उसका कहना है "हर सभ्यता में हर रिवाज, भौतिक वस्तु, विचार और विश्वास कोई न कोई महत्वपूर्ण कार्य पूरा करते हैं।"

इस मान्यता के अनुसार हर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया के प्रकार्य अनिवार्यत: सकारात्मक होते हैं। थोड़ा सा सोचने पर ही आपको स्पष्ट हो जाएगा कि यह धारणा पूर्णत: मान्य नहीं है। आपको, यह पहले ही बताया जा चुका है कि सामाजिक विश्वास और सांस्कृतिक गतिविधि विशेष के प्रकार्य नकारात्मक भी हो सकते हैं। यह भी हो सकता है कि ऐसे विश्वास या गतिविधि विशेष के प्रकार्यों के संपूर्ण आकलन में नकारात्मक ज़्यादा हों।

इसी प्रकार के अन्य उदाहरण लेकर, मर्टन की तरह, इस आधार तत्व की समालोचना की जा सकती है। हो सकता है कि आप क्रिकेट के शौकीन हों, आप कहें कि यह प्यारा खेल है, और खेल की ख़ूबसूरती और कला आपको आनन्द लेने में सहायक हों। निश्चय ही इससे कुछ भी नुक़सान नहीं है। इससे राष्ट्रीय भावना भी मज़बूत होती है और यह आप में देशभक्ति की भावना भरता

है, ये सभी क्रिकेट के सकारात्मक प्रकार्य कहे जा सकते हैं। लेकिन इसके साथ ही क्रिकेट के नकारात्मक प्रकार्यों की अनदेखी नहीं की जा सकती है। क्रिकेट ने फुटबाल और हॉकी जैसे अन्य खेलों को नुक़सान पहुंचाया है और जिस तरह क्रिकेट खिलाड़ियों के चलते ऐश आराम और विलासिता का सूचना माध्यमों (ख़बरों, विज्ञापनों आदि में) द्वारा प्रचार होता है, उससे सच्ची खेल संस्कृति पनपने में इसका नकारात्मक योगदान ही होता है। इस तरह परिणामों के दोनों पक्षों को देखने के बाद ही यह फ़ैसला किया जा सकता है कि किसी सामाजिक संस्था के प्रकार्य सकारात्मक हैं या नकारात्मक।

स्पष्ट है कि मर्टन प्रकार्यों की हर स्थिति में सकारात्मकता के आधार तत्व से सहमत नहीं है। उसका कहना है कि प्रकार्यात्मक विश्लेषण करते समय सकारात्मक और नकारात्मक प्रकार्यों के कुल संतुलन का आकलन होना चाहिए, मात्र सकारात्मक प्रकार्यों का नहीं।

29.3.3 अपरिहार्यता का आधार तत्व (postulate of indispensability)

इस आधार तत्व में यह विश्वास निहित है कि जिस किसी रिवाज या सांस्कृतिक गतिविधि से कोई कार्य पूरा होता है, वह रीति-रिवाज या सांस्कृतिक गतिविधि उस समाज में अपरिहार्य है। मलिनॉस्की की भी यही मान्यता है। दूसरे शब्दों में, समाज की हर रीति-रिवाज, हर सांस्कृतिक गतिविधि अपरिहार्य है, और ऐसा लगता है कि किसी में भी बदलाव संभव नहीं है।

इस आधार तत्व की रॉबर्ट मर्टन द्वारा दी गई समालोचना को समझने से पहले आप एक उदाहरण पर विचार करें। शिक्षा अपरिहार्य कार्य है और इसकी पूर्ति के बिना समाज टिक नहीं सकता। क्योंकि शिक्षा के बिना समाज में ज्ञान, बुद्धिमता, कौशल और प्रशिक्षित कार्यकर्ता विकसित नहीं हो सकते। प्रश्न यह है कि इस अपरिहार्य प्रकार्य की पूर्ति के तरीक़े क्या हैं? आज की शैक्षिक प्रणाली देखें। इस प्रणाली में विद्यार्थी और शिक्षक के बीच परस्पर संवाद और समझ तो है ही नहीं। विद्यार्थी निष्क्रिय ग्रहणकर्ता बना रहता है और अध्यापक उसे ज्ञान, कौशल और सूचना से भर देता है। ऐसी मानवीय संबंधों से रहित प्रणाली के समर्थक इसे अपरिहार्य बताते हुए कह सकते हैं कि यह विद्यार्थी के मस्तिष्क को अनुशासित करती है, उसे आज्ञाकारी बनाती है और इस तरह व्यवस्था को बनाए रखने में सहायक है।

लेकिन पावलो फ्रेयर (Paulo Freire) ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ "द पेडागोजी ऑफ़ द औप्रेस्ड" में बड़े अच्छे तरीक़े से समझाया है कि शिक्षा का वैकल्पिक तरीक़ा भी है। परस्पर संवाद वाली शिक्षा में विद्यार्थी और शिक्षक दोनों ही सक्रिय होते हैं और निष्क्रिय ग्रहणकर्ता न रहकर सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों के अपने विचार होते हैं और भागीदारी होती है। फ्रेयर की राय में यह ज़्यादा रचनात्मक और मानवीय तरीक़ा है। इस तरह, शिक्षा का कार्य अनिवार्य है पर इसे पूरा किए जाने के अलग-अलग तरीक़े हैं। दूसरे शब्दों में हर सांस्कृतिक स्वरूप अपरिहार्य नहीं है। वैकल्पिक सांस्कृतिक स्वरूप से इसके प्रकार्य का ज़्यादा बेहतर तरीक़े से पूरा किया जा सकता है। निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि प्रकार्य के आधार पर किसी भी सांस्कृतिक तत्व की अपरिहार्यता की मान्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाना ज़रूरी है। प्रकार्यात्मक विकल्प की इस अवधारणा को मर्टन ने पहली बार हमारे सामने रखा।

मर्टन का कहना है कि प्रकार्यात्मक विश्लेषण करने वाले को किसी भी चीज़ को अपरिहार्य नहीं मानना है। सामाजिक तथ्यों की जगह ले सकने वाले प्रकार्यात्मक विकल्प होते हैं। सामाजिक तथ्य विशेष द्वारा किया जा सकने वाला प्रकार्य बदली परिस्थितियों में किन्हीं दूसरे तथ्यों द्वारा भी संपन्न किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, ऐसे आधुनिक समाजों में जहां महिलाएं घर के काम के अतिरिक्त अन्य काम करती हैं वहां परिवार के कुछ प्रकार्य अन्य संस्थाएं जैसे बालवाड़ी और दिन में बच्चों की देखभाग करने वाले केंद्र (डे केयर सेंटर) करते हैं।

इस महत्वपूर्ण चर्चा के बाद, आइए बोध प्रश्न 2 को पूरा करें ताकि अभी तक की प्रगति की जाँच हो जाए।

बोध प्रश्न 2

i) प्रकार्यात्मक एकता के आधार तत्व का प्रमुख प्रवक्ता कौन था?

.....

ii) मर्टन ने सार्विकीय प्रकार्यवाद के आधार तत्व का क्यों खंडन किया? लगभग छः पंक्तियां में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) प्रकार्यात्मक विकल्प की मर्टन की अवधारणा क्या है? लगभग चार पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

29.4 प्रकार्यात्मक विश्लेषण का प्रतिरूप (paradigm)

हर समाजशास्त्री के लिए प्रकार्यात्मक विश्लेषण के लिए निश्चित प्रतिरूप या पैराडाइम (paradigm) की ज़रूरत के प्रति सजग होना आवश्यक है। रॉबर्ट मर्टन ऐसे प्रतिरूप की आवश्यकता के प्रति पूर्ण रूप से सजग है। उसके अनुसार प्रतिरूप की सहायता में आधार तत्वों तक सीधे ही पहुंचा जा सकता है और प्रकार्यात्मक विश्लेषण में निहित मान्यताओं (assumptions) को भी समझा जा सकता है। इसके अतिरिक्त प्रतिरूप की मदद से समाजशास्त्री के लिए प्रकार्यात्मक विश्लेषण के राजनीतिक तथा विचारात्मक परिणामों के प्रति संवेदनशील होना संभव हो जाता है।

प्रतिरूप के बिना सिद्धांत को उचित तरीके से नियमबद्ध भी नहीं किया जा सकता। प्रतिरूप से ही समाजशास्त्रीय विश्लेषण में प्रयुक्त मान्यताएं (assumptions), अवधारणाएं और मूल संकल्पनाएं हमारे सामने आ पाती हैं। इससे समाजशास्त्रीय अनुसंधान में मनमानेपन और निरुद्देश्यता की संभावना कम हो जाती है।

प्रकार्यात्मक विश्लेषण के प्रतिरूप से विश्लेषण करने का तरीका क्या हो, किन बातों का अध्ययन करना है, किन पर ज़्यादा ध्यान देना है और पारंपरिक एवं परिवर्तनवादी दृष्टिकोणों के वैचारिक द्वंद्व में विश्लेषण विशेष की जगह कहां पर है यह निर्धारित करना है - ऐसे सभी प्रश्नों पर प्रकार्यात्मक विश्लेषण के प्रतिरूप से हमें मदद मिलती है। आइए इन प्रतिरुपों पर विचार करें।

29.4.1 वे तथ्य जिनके प्रकार्य देखे जा सकते हैं

आपके लिए यह जानना ज़रूरी है किस प्रकार की समाजशास्त्रीय सामग्री का प्रकार्यात्मक विश्लेषण किया जा सकता है। क्या प्रकार्यात्मक विश्लेषण के लिए सभी उपयुक्त हैं - चाहे वे सांस्कृतिक गतिविधियां हों, अनुष्ठान हों, सामाजिक संस्थाएं हों, मशीने हों या व्यक्ति हों? मर्टन का कहना

है कि प्रकार्यात्मक विश्लेषण के लिए पहली शर्त यह है कि विश्लेषण के लिए उपयुक्त तत्व को मानकीकृत (standardised) रुप से विन्यासित (patterned) होना चाहिए, जैसे सामाजिक भूमिकाएं, संस्थागत विन्यास, सामाजिक प्रक्रियाएं, सांस्कृतिक विन्यास, सांस्कृतिक भावनाएं, सामाजिक प्रतिमान, सामाजिक संरचना, सामाजिक नियंत्रण उपाय आदि।

इस प्रकार, नियमित रूप से चलने वाली गतिविधि को प्रकार्यात्मक विश्लेषण के लिए चुना जा सकता है। उदाहरण के लिए प्रकार्यात्मक विश्लेषण के लिए क्रिकेट, विवाह धार्मिक अनुष्ठान या राज्य के दमनकारी तंत्र को चुना जा सकता है। यह इसलिये क्योंकि ये सारे उदारहण मानकित स्वरूप वाले सामाजिक तथ्य (items) हैं। लेकिन प्रकार्यात्मक विश्लेषण के लिए व्यक्ति विशेष की स्वभावगत संवेदनशीलता को नहीं चुना जा सकता क्योंकि यह समाज की नियमित एवं मानकित गतिविधि का उदाहरण नहीं है।

29.4.2 निष्पक्ष परिणामों की अवधारणाएं

मर्टन का यह विचार तो आपको मालूम ही है कि सामाजिक तथ्य के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणाम हो सकते है।। समाजशास्त्री के रूप में हमारा काम इन परिणामों का समग्र रूप से आकलन करना है।

दूरदर्शन के प्रकार्यात्मक विश्लेषण को ही लें। इसमें सकारात्मक प्रकार्य स्पष्ट है। यह आपको दुनिया भर की जानकारी देता है और दुनिया को आपके क़रीब लाता है, लेकिन इसके नकारात्मक प्रकार्य भी देखे जाने चाहिए। यह उपभोक्तावाद (consumerism) और हिंसा को भी कभी-कभी बढ़ावा देता है। इस तरह उचित निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले हमें दूरदर्शन के दोनों तरह के प्रकार्यों पर ध्यान देना चाहिए।

29.4.3 जिसका प्रकार्य देखा जा रहा है उस इकाई की अवधारणा

इस तथ्य की पूरे समाज के लिए सकारात्मक या नकारात्मक भूमिका होनी ज़रूरी नहीं है। कुछ तथ्य एक समूह या उपसमूह के लिए सकारात्मक हो सकते हैं और दूसरे के लिए नकारात्मक।

उदाहरण के लिए दूरदर्शन द्वारा क्रिकेट पर पूरा मैच दिखाए जाने का एक प्रकार्य यह हो सकता है उस समय अपराध संख्या कम हो जाए। यह इसका सकारात्मक प्रकार्य है परन्तु इसका नकारात्मक दुष्प्रकार्य भी हो सकता है। इससे काम करने की जगह पर लोगों की कार्यक्षमता कम हो सकती है क्योंकि अपना काम छोड़कर अक्सर लोग मैच देखने लगते हैं। इसलिए मर्टन का कहना है कि किसी सामाजिक तथ्य के सकारात्मक या नकारात्मक होने के बारे में यह देखना आवश्यक है कि प्रकार्यात्मक परिणामों को पूरे समाज की दृष्टि से जाँचा जा रहा है या समाज के एक उप-समूह की दृष्टि से।

समाजशास्त्री को यह नहीं मानना चाहिए कि उसका काम सामाजिक ढांचे के मात्र स्थिर पक्षों का विश्लेषण करना है। समाजशास्त्री को समाज के ढांचे में आ रहे परिवर्तनों की अनदेखी नहीं करनी चाहिए। मर्टन का कहना हैं कि प्रकार्यात्मक विश्लेषणकर्ता को सामाजिक परिवर्तनों पर पूरा ध्यान देना चाहिए। आपको मालूम ही है कि कुछ भी स्थिर या अपरिहार्य नहीं है और प्रकार्यात्मक विकल्प संभव है। विश्लेषणकर्ता को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि हर सामाजिक तथ्य की सकारात्मक भूमिका नहीं होती। अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों के नकारात्मक परिणाम भी होते हैं। मर्टन का कहना है कि नकारात्मक दुष्प्रकार्यों का होना सामाजिक संरचना में तनाव की स्थिति को बताता है। ऐसे दुष्प्रकार्यों के अध्ययन के आधार पर सामाजिक गतिकी और परिवर्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

29.4.4 प्रकार्यात्मक विश्लेषण के वैचारिक दृष्टिकोणों में समस्याएं

अक्सर यह आरोप लगाया जाता है कि प्रकार्यात्मक विश्लेषण प्राय: "रूढ़िवादी" या "प्रतिक्रियावादी" प्ररिप्रेक्ष्य से ओत-प्रोत होते हैं। लेकिन मर्टन का कहना है कि प्रकार्यात्मक विश्लेषण का अपना कोई अंतर्निहित वैचारिक दृष्टिकोण नहीं होता है। आप किस तरीक़े से उसे इस्तेमाल करें यह आप पर निर्भर करता है, जैसे उदाहरण के लिए, अगर आप प्रकार्य के सकारात्मक परिणामों पर ही ध्यान दें तो आपके विश्लेषण परिणाम अति रूढ़िवादी वैचारिकता के पक्ष में होंगे। दूसरी और, अगर आप नकारात्मक दुष्प्रकार्यों की ओर ही ध्यान दें तो अपने विश्लेषण के परिणाम आपको अति क्रांतिकारी काल्पनिक आदर्श समाज या **यूटोपिया** (utopia) की ओर ले जाएंगे। एक व्यावहारिक उदाहरण लें। एक समाजशास्त्री के रूप में आप जाति व्यवस्था के सकारात्मक प्रकार्यों को ही देखें। जैसे जाति-व्यवस्था प्रतियोगिता की भावना पर रोक लगाती है और इससे व्यवस्था का निश्चित क्रम बना रहता है। जाति-व्यवस्था हर व्यक्ति को स्वधर्म (अपने धर्म) द्वारा निर्धारित पेशा चुनने का निर्देश देती है अत: पेशे की दौड़ के तनाव और समग्र व्यक्तित्व के न बन पाने की स्थिति नहीं आती। यदि आपने विश्लेषण में इस तरह जाति-प्रथा के सकारात्मक पक्ष को देखा है तो आपने अति-रूढ़िवादी वैचारिकता अपनाई है। लेकिन अब आप जाति व्यवस्था के नकारात्मक दुष्प्रकार्यों पर भी ध्यान दें तो आप पर रूढ़िवादिता का आरोप नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि नकारात्मक दुष्प्रकार्यों पर ध्यान देने का अर्थ है परिवर्तन का समर्थन। मर्टन का कहना है कि प्रकार्यात्मक विश्लेषण की अपने आप में कोई वैचारिक प्रतिबद्धता नहीं होती। यह तो मुख्यतय: प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग करने के तरीक़े का प्रश्न है। दूसरा प्रश्न है प्रकार्यों में विभेद का। इसकी चर्चा अगले भाग में की जा रही है। अगले भाग को पढ़ने से पहले सोचिए और करिए 1 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 1

अपने समाज में जातिवाद पर ध्यान दीजिए, इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रकार्यों की समीक्षा कीजिए। दो पृष्ठ की टिप्पणी में इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रकार्यों की सूची बनाइए। संभव हो तो अपने अध्ययन केंन्द्र के अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणियों से अपनी टिप्पणी की तुलना कीजिए।

29.5 व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य - यह विभेद क्यों?

मर्टन के प्रकार्यात्मक विश्लेषण को अव्यक्त प्रकार्य की अवधारणा ने नया अर्थ दिया। उसने इसे व्यक्त प्रकार्य से अलग करके देखा। मर्टन के अनुसार, यही विभेद उसके प्रकार्यात्मक विश्लेषण की विशेष बात है और इससे दुनिया को देखने की दृष्टि से परे हमारी पहुंच हो जाती है। अव्यक्त प्रकार्य की धारणा से सामाजिक विश्वासों व गतिविधियों को समझने के लिए नया परिप्रेक्ष्य मिलता है। इस प्रकार "तर्कपूर्णता" और "तर्कहीनता" तथा "नैतिकता" और "अनैतिकता" के प्रचलित अर्थों को अब दूसरी तरह से भी समझा जा सकता है। क्योंकि कथित रूप में "अनैतिक" अथवा "विवेकहीन" कार्यकलाप में हमें भी अव्यक्त रूप में कोई न कोई आवश्यक सामाजिक कार्य की पूर्ति का आभास हो सकता है। इस तरह सामाजिक ज्ञान और खोज का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है।

29.5.1 "तर्कहीन" लगने वाली बातें सार्थक हो जाती हैं

अव्यक्त और व्यक्त प्रकार्यों के विभेद से समाजशास्त्री का विश्लेषण बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। अगर हमें अव्यक्त प्रकार्यों की समझ होगी तो हमें ऐसी हर बात को जिसका कोई तुरंत या व्यक्त तथा सकारात्मक परिणाम नहीं है, सीधे-सीधे "तर्कहीन" करार करने में हिचक होगी। हमारे सामने कहीं ज़्यादा गहरे प्रश्न उठेंगे, जैसे "तर्कहीन" लगने वाली बात आज तक क्यों बनी है?

तभी हमें संभवत: तर्कहीन कहे जाने वाले कार्य या विश्वास के पीछे छिपे और अव्यक्त अर्थ को समझने की आवश्यकता महसूस होगी। मर्टन ने होपी जनजाति के एक उदाहरण से अपनी बात समझाने का प्रयास किया है। होपी जनजाति के लोग अच्छी वर्षा होने के लिए अनुष्ठान करते हैं। इस अनुष्ठान को धर्मनिरपेक्ष, तर्कशील लोग कितना महत्व दे सकते हैं? निश्चय ही इस अनुष्ठान से वर्षा नहीं होती। वर्षा का किसी अनुष्ठान या पूजा-पाठ से कोई मतलब नहीं है। तुरंत हमारे लिए यह निष्कर्ष निकालना आसान हो जाता है कि होपी अनुष्ठान आदिवासियों का एक तर्कहीन अंधविश्वास है।

इसी बिंदु पर तुरंत मर्टन इस निष्कर्ष पर पहुंचने से हमें रोकता है। जल्दबाज़ी में यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि इस संस्कर से कुछ प्राप्त नहीं होता। मर्टन कहता है कि हम इस संस्कर का गहरा छिपा हुआ अर्थ समझें। अनुष्ठान से वर्षा तो नहीं होती लेकिन इससे होपी जनजाति के बिखरे सदस्य एक जगह जमा होकर सामूहिक रूप से कार्य करते हैं। उनकी एकजुटता मज़बूत होती है और उनके समाज या जाति में एकता आती है। यह मामूली उपलब्धि नहीं है। यही इस अनुष्ठान का अव्यक्त प्रकार्य है।

29.5.2 खोज के नए सवालों का उदय

अभी तक की गई चर्चा से आपको स्पष्ट हो गया होगा कि समाजशास्त्री का काम आम व्यक्तियों की भांति नहीं होता। अव्यक्त प्रकार्यों की धारणा के प्रति सजग हो अपने विशिष्ट प्रशिक्षण के आधार पर उनके लिए खोज के नए सवालों में जाना संभव है। समाज के सदस्य आमतौर पर व्यक्त और सामने होने वाले प्रकार्यों के बोध तक ही अपने को सीमित रखते हैं और गहरे तथा छिपे हुए परिणामों के बारे में सोचते भी नहीं हैं और न जानते हैं। लेकिन समाजशास्त्री के लिए बाहर से ही नज़र आने वाले परिणामों से संतुष्ट होना संभव नहीं है। उनकी रुचि सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के गहरे अर्थ और आयामों की तलाश में होती है। इसलिए उनका ध्यान ऐसे सामाजिक तथ्यों पर जाता है जिनमें दुनियादारी वाली व्यवहारिकता परखने वाले लोगों की ज़रा भी दिलचस्पी नहीं होती क्योंकि ऐसे लोग प्राय: सीधे-सीधे काम से मतलब रखते हैं।

इसी बात को समझने के लिए एक उदाहरण लें। मान लीजिए कि आप केवल गंभीर "कलात्मक" फ़िल्मों के शौक़ीन किसी व्यक्ति से बात कर रही हैं। उसकी राय में "व्यावसायिक" (commercial) फ़िल्मों में केवल बकवास होती है, लेकिन अगर आप मर्टन द्वारा बताए अव्यक्त प्रकार्यों की समझ रखती हैं तो आप बुद्धिजीवी के तर्क की क़ायल नहीं होंगी क्योंकि व्यावसायिक फ़िल्मों की कहानी, संगीत, नृत्य, रोमांस और लड़ाई के दृश्यों की "निरर्थक बकवास" में भी आप पाएंगी कि लोग सनातन विश्वासों और आस्थाओं की छवि पा रहे हैं। ये विश्वास हैं - मातृत्व की गरिमा, अंतत: अच्छाई की बुराई पर जीत, बदमाश का हारना आदि। तेज़ी से बदलती दुनिया में ये विश्वास और आस्थाएं समाप्त हो सकती हैं। व्यावसायिक फिल्मों का अव्यक्त प्रकार्य समाज को आस्थाहीनता की ऐसी विस्फोटक स्थिति से बचाना है। ये फ़िल्में विस्फोटक स्थिति से बचाने के लिए "सुरक्षा वाल्व" की तरह काम करती हैं और लोगों की आस्था मज़बूत बनाती हैं। मर्टन द्वारा सुझाई गई इस दृष्टि से देखने पर समाजशास्त्रीय अनुसंधान का एक नया क्षेत्र (व्यावसायिक फ़िल्मों का अध्ययन) खुलता है। इस बिंदु को पूरी तरह आत्मसात करने हेतु सोचिए और करिए 2 को पूरा करें।

सोचिए और करिए 2

होली जैसे सामाजिक-धार्मिक त्यौहार के अव्यक्त प्रकार्यों को समझने का प्रयास कीजिए कि कैसे यह विश्लेषण अनुष्ठानों, रिवाज़ों और त्यौहारों के प्रति आपकी दृष्टि को व्यापक बनाता है। होली के व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्यों के बारे में एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए और संभव हो तो अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणियों से इसकी तुलना कीजिए।

29.5.3 समाजशास्त्रीय ज्ञान का विस्तार

स्पष्ट है कि अव्यक्त प्रकार्य की समझ रखने वाले समाजशास्त्री का ज्ञान के विकास में सकारात्मक योगदान होता है। अगर समाजशास्त्री व्यक्त प्रकार्यों से ही संतुष्ट हो जाए तो उसके पास कुछ नई बात कहने का कुछ नहीं रहेगा। इसलिए, मर्टन ने कहा है कि अव्यक्त प्रकार्यों के विभेद से समाजशास्त्रीय ज्ञान का क्षेत्र व्यापक होता है।

मर्टन ने इस सिलसिले में एक बड़े रोचक उदाहरण की चर्चा की है। वह उदाहरण वेब्लेन (Veblen) की प्रसिद्ध पुस्तक *थ्योरी ऑफ़ द लेज़र क्लास* (1989) से लिया गया है जिसमें लेखक ने शानदार वस्तुएं खरीदने के तरीक़ों के पीछे छिपे अव्यक्त प्रकार्य की समीक्षा की है। वेब्लेन को समझने से पहले, एक साधारण प्रश्न का उत्तर तलाशना बेहतर होगा - लोग कारों, टेलीविज़नों, वाशिंग मशीनों यहां तक कि धुलाई के साबुनों के नये-नये मॉडलों को बहुत ज़्यादा महत्व क्यों देते हैं?

लोग महंगी, आकर्षक पैकिंग वाली उपभोक्ता वस्तुएं क्यों ख़रीदना चाहते हैं? यह हमेशा कहा जा सकता है कि लोग कार परिवहन की सुविधा के लिए ख़रीदते हैं; टेलीविज़न इसलिए ख़रीदते हैं कि इसके कार्यक्रमों से दुनिया भर की राजनीति, संस्कृति आदि की जानकारी मिलती है। निश्चय ही उपभोक्ता वस्तुओं के ये व्यक्त प्रकार्य हैं और उपभोक्ताओं को इनकी पूरी जानकारी है।

हर व्यक्ति को यह बात मालुम है। अब इस क्षेत्र में समाजशास्त्री का क्या योगदान है? मर्टन ने कहा है कि वेब्लेन के विश्लेषण से पता चलता है कि किस तरह समाजशास्त्री द्वारा उपभोग के तरीक़ों के व्यक्त प्रकार्यों से आगे जाकर अध्ययन किया जाता है और ऐसी नयी बातें बताई जाती हैं जो सामान्य व्यक्ति की समझ से पूरी तरह भिन्न हैं। वेब्लेन के अनुसार लोग नये मॉडल की कार या टेलीविज़न सिर्फ परिवहन की सुविधा या दुनिया के बारे में जानने के लिए ही नहीं ख़रीदते, बल्कि इन्हें ख़रीदने से उनके ऊँचे सामाजिक स्तर की भी पुष्टि होती है। क़ीमती चीजें ख़रीदने का अव्यक्त प्रकार्य है ऊंचे सामाजिक स्तर की पुष्टि। मर्टन के अनुसार इसी तरीक़े से समाजशास्त्री द्वारा दुनिया के बारे में तथा विश्वासों, सांस्कृतिक गतिविधियों और जीवन-शैली के परिणामों के बारे में हमारे ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होता है।

29.5.4 स्थापित नैतिक मूल्यों को चुनौती मिलती है

जो बातें "अनैतिक" लगती है, उनके बने रहने के पीछे भी उनके अव्यक्त प्रकार्य होते हैं। इसीलिए मर्टन का कहना है कि हमेशा समाज के स्थापित नैतिक मूल्यों से सर्वदा सहमत होना उचित नहीं है क्योंकि जब तक कथित रूप से "अनैतिक" गतिविधियों या संस्थाओं के अव्यक्त प्रकार्यों की किसी वैकल्पिक गतिविधि या संस्था से पूर्ति नहीं होती, नैतिक मानदंड निरर्थक और बिल्कुल व्यर्थ होते हैं। ये कोई सामाजिक उद्देश्य नहीं पूरा करते, मात्र सामाजिक औपचारिक भर रह जाते हैं।

मर्टन अमरीकी समाज से एक उदारहण देता है । सरकारी लोकतंत्र जो नहीं कर पाता वह "अनैतिक" राजनैतिक तंत्र पूरा करता है। अमरीकी लोकतंत्र में अलग-अलग पहचान वाले मतदाताओं की जगह उन्हें एक सामूहिक पहचान मात्र से जाना जाता है। लेकिन 'राजनीतिक तंत्र' समाजशास्त्रीय दृष्टि से जागरूक होने के नाते हर मतदाता को परिवेश विशेष में रहने वाला, अपनी अलग पहचान वाली समस्याओं और ज़रूरतों वाला व्यक्ति मानता है। इस तरह समूह मात्र को पहचानने वाले समाज में राजनैतिक तंत्र एक मानवीय एवं व्यक्तिगत ढंग से ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने का महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य करता है।

मर्टन का अर्थ स्पष्ट है। उसके अनुसार, कथित रूप से "अनैतिक" गतिविधि की आलोचना तब तक निरर्थक है जब तक प्रकार्यात्मक अर्थों में एक "नैतिक" विकल्प को सामने न रखा जा सके।

इस प्रकार नैतिकता अथवा अनैतिकता पर आधारित समालोचना विकल्प के बिना अपने आप में पर्याप्त नहीं होती है।

चर्चा के इस पड़ाव पर आकर अब बोध प्रश्न 3 पूरा करें तथा इस इकाई की पाठ्य सामग्री का सारांश पढ़ें।

बोध प्रश्न 3

i) व्यक्त और अव्यक्त प्रकार्य के विभेद के पीछे चार कारण क्या हैं? लगभग चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

ii) अव्यक्त प्रकार्य से समाजशास्त्रीय ज्ञान का क्षेत्र कैसे विस्तृत होता है? एक उदाहरण सहित लगभग दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

iii) निम्न कथनों में से कौन सा कथन सही है?

क) प्रकार्यात्मक विश्लेषण निश्चित रूप से रूढ़िवादी होता है।

ख) प्रकार्यात्मक विश्लेषण निश्चित रूप से आमूल परिवर्तन होता है।

ग) प्रकार्यात्मक विश्लेषण की अपने आप में कोई वैचारिक प्रतिबद्धता नहीं होती।

29.6 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि रॉबर्ट मर्टन ने प्रकार्यात्मक विश्लेषण को किस प्रकार नया रूप दिया और परंपरागत आधार तत्वों और प्रतिरूपों से उसने किस तरह अपनी असहमति व्यक्त की। आपने यह भी पढ़ा कि कैसे मर्टन ने प्रकार्यात्मक विश्लेषण का अपना तरीक़ा सामने रखा, जो ज़्यादा लचीला है और दुराग्रहों से मुक्त है। मर्टन के तरीके की परिधि में गतिशीलता, परिवर्तन और दुष्प्रकार्यों जैसे सामाजिक अनुभवों को शामिल किया जा सकता है। विशेष महत्वपूर्ण बात यह है कि अव्यक्त प्रकार्यों की अपनी समझ से मर्टन ने समाजशास्त्रीय ज्ञान और शोध का क्षेत्र विकसित करने का प्रयास किया। मर्टन ने ऐसी सामाजिक गतिविधियों के छिपे अर्थ हमारे सामने उजागर किए जिसे सामान्य दृष्टि से नहीं देखा जा सकता है।

29.7 शब्दावली

विचलन (deviance) समाजशास्त्र में इस शब्द का तात्पर्य ऐसे अनैतिक व्यवहार से है

जो समाज के स्वीकृत नैतिक आदर्शों के विपरीत हो। जैसे नशीले पदार्थों का सेवन एक ऐसा व्यवहार है जो सामान्य और स्वस्थ जीवन के समाज-स्वीकृत आदर्शों के मार्ग से हमें "विचलित" करता है या अलग ले जाता है।("डीविएंस" का शाब्दिक अर्थ "विचलन" या सही रास्ते से हटना है)।

प्रभुत्व (hegemony) ऐसी प्रक्रिया, जिसमें समाज का कोई वर्ग विशेष उदाहरण के लिए, सत्ताधारी वर्ग, अपने जीवन-मूल्यों और आदर्शों को बाकी समाज पर थोपता है। परिणाम यह होता है कि बाहर से तो समाज में सर्वसम्मति का वातावरण दिखता है, पर वास्तव में समाज बंटा हुआ रहता है।

युटोपिया (utopia) पूर्ण आदर्श समाज की कल्पना-ऐसा समाज जो यथार्थ से एकदम भिन्न हो, ऐसा ही समाज बनाने के लिए क्रांतिकारी और शोषित वर्ग अक्सर संघर्ष करते हैं।

29.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

मर्टन, रॉबर्ट के. 1968. *सोशल थ्योरी एंड सोशल स्ट्रक्चर* फ्री प्रेस: न्यूयार्क

टर्नर, जे. एच. 1987. *स्ट्रक्चर ऑफ़ सोशियोलॉजिकल थ्योरी*. रावत पब्लिकेशंस: जयपुर

29.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) समाजशास्त्री "फंक्शन" या "प्रकार्य" शब्द का इस्तेमाल किसी सामाजिक संस्था या सांस्कृतिक गतिविधि के सामाजिक व्यवस्था, एकता और जुड़ाव को बनाये रखने में योगदान के अर्थ में करते हैं। साथ ही व्यक्ति विशेष की सामाजिक संस्था विशेष के "प्रकार्य" के बारे में जो व्यक्तिगत राय है, उससे समाजशास्त्री भ्रमित नहीं होते। सामाजिक संस्था के "प्रकार्य"के देखे जा सकने वाले निष्पक्ष परिणामों के आधार पर उसके बारे में उनके द्वारा निर्णय लिये जाते हैं और देखा जाता है कि सामाजिक संस्था या प्रक्रिया विशेष समाज की व्यवस्था और जुड़ाव को बनाए रखने में वास्तव में क्या योगदान देती है।

ii) सामाजिक प्रक्रिया या संस्था से जुड़ा कर्ता इनके व्यक्त प्रकार्य को तो जानता है परं अव्यक्त प्रकार्य की उसे विशेष समझ नहीं होती। व्यक्त प्रकार्य तो तुरंत नज़र आता है पर अव्यक्त प्रकार्य छिपा हुआ होता है, जिसका विश्लेषण समाजशास्त्री करते हैं।

iii) दुष्प्रकार्य समाज में व्यवस्था और एकता लाने की बजाए, अव्यवस्था और अराजकता लाते हैं। जैसे, जाति-प्रथा का प्रकार्य है क्योंकि यह लोगों में परस्पर सहयोग बढ़ाने और समतामूलक लोकतंत्र बनाने में बाधक है।

बोध प्रश्न 2

i) रैडक्लिफ़-ब्राउन

ii) सार्विकीय प्रकार्यवाद के आधार तत्व का मतलब है कि सभी सामाजिक और सांस्कृतिक तथ्यों, संस्थाओं और प्रक्रियाओं के प्रकार्य सकारात्मक होते हैं। मर्टन ने इसका खंडन किया। अपने विश्लेषण से उसने स्पष्ट किया कि सामाजिक और सांस्कृतिक इकाइयों के नकारात्मक प्रकार्य

भी होते हैं। इसीलिए मर्टन ने कहा कि सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों का समग्र आकलन किया जाना चाहिए, केवल सकारात्मक परिणामों का नहीं।

iii) मर्टन का कहना है कि कोई भी सांस्कृतिक प्रक्रिया अपरिहार्य नहीं है क्योंकि इसका प्रकार्य किसी वैकल्पिक सांस्कृतिक प्रक्रिया द्वारा भी संभव है। एक ही कार्य दूसरी प्रक्रिया या संस्था द्वारा भी किया जा सकता है। यही मर्टन की प्रकार्यात्मक विकल्प की अवधारणा है।

बोध प्रश्न 3

i) व्यक्त और अव्यक्त प्रकार के पीछे चार कारण है :

   क) "तर्कहीन" लगने वाली चीज़ें सार्थक बन जाती हैं।

   ख) शोध के नये क्षेत्र विकसित होते हैं।

   ग) समाजशास्त्रीय ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होता है।

   घ) स्थापित नैतिक मूल्यों को चुनौती मिलती है।

ii) उदाहरण के लिए, हमारे समाज में बढ़ते उपभोक्तावाद को अव्यक्त प्रकार्य की धारणा से समझाया जा सकता है। कारें, टेलीविज़न सेट और कपड़े धोने का साबुन आदि चीज़े केवल उनके व्यक्त प्रकार्यों, अर्थात् उनसे प्राप्त सुविधाओं के कारण ही नहीं ख़रीदी जातीं। ज़्यादा से ज़्यादा चीज़ों के उपभोग के पीछे ऊंचे सामाजिक स्तर की पुष्टि करने की इच्छा छिपी है। यह उपभोग का अव्यक्त प्रकार्य है। उपभोक्तावाद प्रतिस्पर्धात्मक, भौतिकवादी संस्कृति को बनाए रखता है। ऐसी संस्कृति में ही पूंजीपति अपना प्रभुत्व बनाए रखते हैं। ऐसे ही विश्लेषणों से अव्यक्त प्रकार्य की धारणा समाजशास्त्रीय ज्ञान के क्षेत्र का विस्तार करती है।

iii) ग)